Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

साहित्य में विमर्श के विविध आयाम

सम्पादक
डॉ. अजीत कुमार दास

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

साहित्य में विमर्श के विविध आयाम
© डॉ. अजीत कुमार दास

प्रकाशक :
आनन्द प्रकाशन
176/178, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता - 700007

ISBN : 978-93-88858-77-9

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 799.00

मुद्रक :
रुचि प्रिंटर्स
कोलकाता - 7

अनुक्रम

भूमिका 7

वृद्ध विमर्श

वृद्ध विमर्श और आधुनिक हिंदी कहानियाँ - *डॉ. सुनीता साव* 15
समकालीन हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श - *डॉ. पूनम सिंह* 25
भूमंडलीकरण और समाज में तिरस्कृत, उपेक्षित वृद्धों की स्थिति को बयां करती कुछ कहानियां : वृद्ध विमर्श - *पिंकी मिश्रा* 37

बाल विमर्श

बाल साहित्य का स्वरूप - *डॉ. कुमारी उर्वशी* 42
आपका बंटी में बाल विमर्श - *प्रार्थना कुमारी* 48
बाल विमर्श के आईने में हिन्दी कथा साहित्य का मूल्यांकन - *अलका गुप्ता* 54

शिक्षा विमर्श

भारतीय शिक्षा व्यवस्था का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन - *डॉ. विकास कुमार साव* 60
भारतीय शिक्षा का इतिहास और वर्तमान शिक्षा प्रणाली - *नेहा गौड़* 73
विमर्श के आईने में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन - *रीता कुमारी जयसवाल* 82

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श

डॉ. पूनम सिंह

वृद्धावस्था उम्र का एक अनिवार्य व स्वाभाविक पड़ाव है। विडंबना यह है कि जिस जीवन की पूर्णता या जीवन का स्वभाविक व अनिवार्य पड़ाव माना जाता है, आज वह जीवन का त्रासद और भयानक पक्ष भी बन गया है। भारत ही नहीं वैश्विक धरातल पर भी आज वृद्धावस्था की चिंता चुनौती के रूप में आ खड़ी हुई है। ऐसे समय में अनिवार्यता बन पड़ी है कि हम वृद्धावस्था पर गंभीर और सार्थक बहस करें।

एक प्रश्न अनिवार्य रूप से हमारे जेहन में उठता है कि आखिर वृद्ध किसे कहेंगे? वृद्धावस्था का संबंध क्या सिर्फ उम्र से है? जो केन्द्र से हाशिए पर चला गया है वही वृद्ध है क्योंकि आज वह शरीरिक रूप से लाचार है, उसके पास विकल्प नहीं है, वह निर्णय नहीं ले सकता, वह दूसरों पर निर्भर है। भले ही वह आर्थिक रूप से कितना ही आत्मनिर्भर क्यों न हो? वृद्धावस्था को एक विशेष मूल्यगत अवस्थिति के रूप में गुर्रमकोंडा नीरजा ने प्रस्तुंत किया है- "जिन्हें भविष्य की कोई चिंता नहीं रहती वही वृद्ध है। कहने का आशय है 75-80 वर्ष के होने पर भी जिस व्यक्ति को भविष्य की चिंता होती है, वह युवा ही है क्योंकि उम्र कार्यों को पूर्ण करने की चिंता जीवन में कुछ और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेगी। जैसे-जैसे मनुष्य अपने आप को वृद्ध मानने लगता है, वह कमजोर महसूस करने लगता है तथा सहानुभूति अर्जित करने की इच्छा रखता है। धीरे-धोरे वह परिधि की ओर जाने के लए विवश हो जाता है। ऐसे में उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाता है।"[1] यह सच है कि भविष्य की योजना की जगह यथास्थिति के प्रति मौनमूक सहमति इस उम्र के व्यक्ति की नियति बन जाती है पर यदि कोई योजना है तो उसे युवा के रूप में लिया जाना उचित नहीं है। यह संदर्भ अलग है कि उसकी मूल्य दृष्टि से हम सहमत हो या नहीं। हम कह सकते हैं कि वृद्धावस्था उम्र का एक पड़ाव नहीं है बल्कि एक धारणा हैं, जिससे पूरा परिवार व समाज संचालित हो रहा है। पर धारणा किसी खास उम्र